प्रातःक्लास 30.3.68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद हैं?

ओमशान्ति। भगवानुवाचः बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। इस दुनियां को आसुरी दुनियां कहेंगे। नई दुनियां को दैवी दुनियां कहेंगे। दैवी दुनियां में मनुष्य बहुत थोड़े होते हैं। अभी यह राज़ भी किसको बताना चाहिए जो फैमिली प्लानिंग के मिनिस्टर होते हैं। उन्हों को समझाना चाहिए। बोलो फैमिली प्लानिंग ड्यूटी तो गीता के ..... अनुसार बाप ही की है। गीता को तो सभी मानते हैं। गीता है ही फैमिली प्लैनिंग का शास्त्र। गीता से ही बाप बैठ नई दुनियां की स्थापना करते हैं। यह तो ऑटोमेटिकली ड्रामा में उनका पार्ट नूँधा हुआ है। बाप ही आकर आदि सनातन देवी–देवता धर्म वा प्योर नेशनलिटी की स्थापना करते हैं। अपन को देवी–देवता धर्म ही कहेंगे। गीता में भगवान सिर्फ बतलाते हैं कि मैं आता हूं एक धर्म की स्थापना करने। तो इससे फैमिली प्लैनिंग नम्बरवन हो जावेंगे। सारे विश्व पर जय–जय हो जावेगा। एक ओर आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना हो जावेगी। अभी तो बहुत मनुष्य कारण बहुत कचड़ा हो गया है। इस समय मनुष्य हैं कुतरे–बिलरे, बिच्छू–टिण्डन मिसल। शास्त्रों में भी दिखाते हैं शंकर पार्वती के पिछाड़ी पड़ा। तो वीर्य गिरा और उनसे बिच्छू–टिण्डन पैदा हुये। अभी वास्तव में बिच्छू–टिण्डन तो इस समय के मनुष्य हैं। अभी जो नई प्लैनिंग होती है उसमें कुत्ते–कुतरियां, बिच्छू–टिण्डन जैसे थोड़े ही पैदा होंगे। वहां के जनावर, पक्षी आदि भी बड़े फर्स्ट क्लास होंगे। जो देखने से ही दिल खुश हो जाये। डरने की बात ही न हो। बाप बैठ समझाते हैं तुमने मुझे बुलाया ही इसलिए है कि फैमिली प्लैनिंग करो अर्थात् पतित फैमिली को वापस ले जाओ। पावन फैमिली की स्थापना करो। तुम सभी कहते थे बाबा आकर पतित दुनियां खलास कर नई पावन दुनियां बनाओ। यह बाप की ही प्लैनिंग है। अनेक धर्म खलास कर एक धर्म की स्थापना कर देते हैं। यह तो बहुत फर्स्ट क्लास फैमिली प्लैनिंग है। देखने से ही दिल खुश हो जावे। ल.ना. को देखने से तुम्हारी दिल खुश होती है ना। वहां तो यथा राजा–रानी तथा प्रजा सभी फर्स्ट क्लास होते हैं। तो यह फैमली प्लैनिंग कि युक्ति ड्रामा में नूँधी हुई है। तुम बच्चों को समझाना है पारलौकिक बाप तो सतयुगी प्लैनिंग फर्स्ट क्लास करते हैं बाकी कांटों के जंगल को खलास कर देते हैं। इस सारी भंभोर को आग लग जाती है। यह धंधा तो बाप का है। तुम कुछ भी कर नहीं सकते हो। कितनी भी मेहनत करो सक्सेसफुल कोई हो न सके। बाप कहते हैं तुम काम विकार को अपना मित्र समझते हो। वह तो बड़ा भारी दुश्मन है। बहुत हैं जो उनको मित्र समझते (ब)ड़े ही धूम–धाम से कटारी चलाते हैं। उनका भी एक ऐसा चित्र बनाना चाहिए। कुमार और कुमारी दोनों के हाथ में काम कटारी देना चाहिए। वह उनके गले में ,वह उनके गले में लगाते हैं। फिर तुम समझाओ बा(प) कहते हैं काम महाशत्रु है और फिर तुम काम कटारी चलाते हो। बाप ऑर्डीनेन्स निकालते हैं उन पर जीत पहनो। यह भी ड्रामा में नूँध है। बिचारों को पता ही नहीं है कि फैमली प्लैनिंग कैसे हो रहा है। यह तो कल्प–2 बाप ही करते हैं। ड्रामा अनुसार फिर यह होनी ही है। सतयुग में होते ही बहुत थोड़े मनुष्य हैं। इसमें फिक्र की तो बात ही नहीं। बाप प्रैक्टिकल में यह काम कर रहे हैं। वह लोग तो कितना माथा मारते रहते हैं। एड्युकेशन मिनिस्टर को भी तुम समझा समझा सकते हो, अभी के कैरेक्टर्स कितने ख़राब हैं, देवताओं के कैरेक्टर कितने अच्छे थे। मनुष्य बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि हैं। ऐसे तुम बेपरवाह बादशाह बनकर वाणी चलाओ। बोलो, यह कोई मिनिस्टर का काम थोड़े ही है। यह तो ऊँच ते ऊँच बाप का ही काम है। उनके राज्य में बरोबर एक राज्य, एक धर्म, एक भाषा थी ना। कितने थोड़े मनुष्य थे जबकि इनका राज्य था। पूछना चाहिए ना; परन्तु ऐसों से बोलना बहुत थोड़ों को आता है। बुत–2 करते रहते हैं। तो फिर वह रूहाब नहीं रहता। उन्हों को यह ल.ना. का चित्र दिखाना चाहिए। यह फैमली प्लैनिंग बाप ने ही की थी। अभी फिर कर रहे हैं। उनके राज्य की स्थाप(ना) हो रही है। बाबा ने कहा है यह ल.ना. का चित्र एकदम फ्रन्ट में रखो और बत्तियां आदि खूब जगाओ। प्रभ(ा)तफेरी में भी यह ट्रान्सलाइट का चित्र हो तो कोई भी एकदम क्लीयर देख सके। बोलो, हम यह फैमली प्लैनिंग

कर रहे है। यथा राजा–रानी तथा प्रजा। डीटी डिनायस्टी की स्थापना हो रही है। बाकी सभी विनाश हो जाये। तुम कहते भी हो हे पतित–पावन आकर हमको पावन बनाओ। सो तो बाप ही बनाय सकते हैं। एक देवी–देवता धर्म ही पावन होता है। बाकी सभी ख़त्म हो जाते हैं। बाबा खुद कहते हैं। बाबा–बाबा ऐसे और कोई कह नहीं सकते। ऐसे नहीं कि तुम ब्रह्मा के लिए कहते हो। बोलो, शिवबाबा के हाथ में यह प्लैनिंग हैं। सतयुग में यह प्लैनिंग हो जाती है। अभी यह है पुरुम संगमयुग जबकि मनुष्य पुरुषोत्तम बन जाते हैं। बाबा यह प्लैनिंग जीते जी करते हैं। तुम्हारी स्थापना हो रही है। वहां हैं ही देवी–देवताएं। वैश्या, शुद्र होते नहीं। यह तो बड़ी फर्स्ट क्लास प्लैनिंग है। बाकी सभी धर्म खलास हो जावेंगे। इस बाप की प्लैनिंग को आकर समझो। तुम्हारी इस बात को सुनकर तुम पर कुर्बान जावेंगे। यह मिनिस्टर आदि कुछ भी कर न सकेंगे। विकारी हैं ना। वह फिर निर्विकारी प्लैनिंग कैसे बनावेंगे। कितना सहज है; परन्तु ऐसी–2 बातें तुम करते नहीं हो। बाप जो ऊँच ते ऊँच भगवान है वह आते ही हैं यह प्लैनिंग करने। बाकी सभी अनेक धर्मों को खलास कर देते हैं। हर बात है ही बेहद के बाप के हाथ में। पुरानी चीज़ को ख़त्म कर नया बना देते हैं। वहां बिच्छू–टिण्डन आदि कुछ नहीं होते। बाप नई दुनियां स्थापन कर पुरानी दुनियां विनाश कर देते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। समझाना चाहिए बहनों और भाईयों इस सृष्टि चक्र के आदि, मध्य, अंत को तुम नहीं जानते हो। बाप बतलाते हैं सतयुग आदि में आदि सनातन देवी–देवता धर्म था। वहां न इतने मनुष्य होते हैं न प्लैनिंग आदि की बात ही करते हैं। पहले तो सृष्टि के आदि, मध्य, अंत को आकर समझो। सदगति दाता बाप ही है। सद्गति अर्थात् सतयुगी मनुष्य। पहले–2 थे ही यह देवी–देवताएं। बहुत थोड़े थे। फर्स्ट क्लास धर्म था। बाबा फूलों की फर्स्ट क्लास प्लैनिंग बनाते हैं। काम तो महाशत्रु है। आजकल तो इनके पिछाड़ी प्राण देते हैं। कोई (की) किसी के साथ दिल होती है और शादी नहीं कराई जाती है तो बस घर में ही हंगामा मचा देते हैं। यह है ही गंदी दुनियां। एक/दो पर काम कटारी चला कांटा लगाते ही रहते हैं। सभी हैं डर्टी। शादियां कराते हैं कितना खुश होते हैं। तो यह भी चित्र बनाओ। उन दोनों के हाथ में कटारी हो। सतयुग में तो काम कटारी की बात ही नहीं। दोनों को फल मिलता है। फूलों की वर्सा होती है। तो ऐसे ही विचार–सागर–मंथन करो। बाबा इशारे तो देते ही रहते हैं। तुम उनको रिफाइन करो। चित्र भिन्न–2 प्रकार के बनाते तो हैं ना? ड्रामा अनुसार जो कुछ होता है वह ठीक ही होता है। किसको भी समझाना बहुत सहज है। सभी का अटेन्शन बाप के तरफ खैंचना है। बाप का ही यह काम है। अभी बाप ऊपर बैठकर तो प्लैनिंग नहीं करेंगे। कहते भी हैं जब–2 धर्म की ग्लानी होती है ,आसुरी राज्य हो जाता है तभी आकर इन सभी को खलास कर दैवी राज्य की स्थापना करता हूं। असुर लोग तो अज्ञान नींद में सोये हुये हैं। यह सभी विनाश हो जावेंगे। विकारियों का विनाश होता है। जो निर्विकारी बनते हैं वह फैमली आकर राज्य करती है। गायन भी है ब्रह्मा द्वारा स्थापना किसकी? यह फैमली प्लैनिंग की। यह प्लैनिंग हो रही है। ब्रह्माकुमारियां पवित्र बनती है तो उन्हों के लिए ज़रूर पवित्र नई दुनियां चाहिए। अभी यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। बहुत ही छोटा है। 50–60 वर्ष में बहुत अच्छी प्लैनिंग कर देते हैं। बाप सभी का हिसाब–किताब चुक्तू करा कर अपने घर ले जाते हैं। इतना सारा कचड़ा तो वहां ले जावेंगे। छी–छी आत्माएं जा नहीं सकतीं ; इसलिए बाप आकर गुल–2 बनाते हैं ले जाने लिए। तो ऐसी बातों पर विचार–सागर–मंथन करो। तुम रिहर्सल करते रहते हो। बाप कहते हैं मैं एक धर्म की स्थापना कराने तुमको रिहर्सल करा रहा हूं। यह फैमली प्लैनिंग किसने की? बाप कहते हैं कल्प पहले मिसल मैं अपना कार्य कर रहा हूं। पुकारते ही हो बाबा पतित फैमली से बदल कर पावन फैमली की स्थापना करो। इस समय सभी पतित हैं। शादियों पर कितना लाखों खर्चा करते हैं। कितना शादमाना करते हैं। और ही पावन से बदल पतित बनते हैं। पहले कुमारी पावन होती है। बहुत कुमारियां भी बहुत गंदी होती हैं। कितना भी समझाओ, समझती नहीं।

बस मूत पीने की ही तात लगी रहती है। काम कटारी चलावें, मूत पीवें वही चिन्तन चलता रहता है। ऐसे भी (हैं) बच्चों को देखते हैं तो समझते हैं हम भी काम कटारी चलावें। हनीमून करते जाते हैं ना। काम कटारी चलाने जाते हैं। उसका नाम रखा है हनीमून। सुनते हैं तो दिल होती है हम भी काला मुँह करें। कृष्ण भी पुनर्जन्म लेते, हनीमून करते काला बना है ना ; इसलिए उनको श्याम–सुन्दर कहा जाता है। ज्ञान चिक्षा पर बैठ सुन्दर बना। फिर काम चिक्षा पर बैठ काला मुँह किया। आजकल तो राम को भी काला ,कृष्ण को भी काला दिखलाते हैं। पूछो तो सही काला क्यों हुये है? कहेंगे हम क्या जानें? अरे, वह तो रामराज्य में गोरे थे। फिर रावण राज्य में काले बने हैं। बाप अर्थ कितना क्लीयर समझाते हैं। काम कटारी चलाते–2 काले बने हैं। कोई–2 कुमारियां ऐसी जो काला मुँह करने बिगर रह नहीं सकती हैं। बाबा दिन–प्रतिदिन बड़े ही कड़े अक्षर देते रहते हैं। लौकिक बाप भी समझाते हैं शादी न करो। काला मुँह हो जावेगा। बाप को भी जबाव दे देती हैं। काला मुँह कर जल कर खत्म हो जावेंगी। बाप ने आगे भी बहुत कड़ी वाणी चलाई थी। अभी भी समझाते रहते हैं। (अ)भी तुम बच्चों को भी यही धंधा करना चाहिए। समझाना चाहिए। सभी आसुरी नींद में सोये पड़े हैं। उनको जगाना है। गोरा बन औरों को बनावे तो बाप का प्यार भी जाये। सर्विस ही नहीं करेंगे तो मिलेगा क्या? कोई बादशाह बनते हैं तो ज़रूर अच्छे कर्म किये हैं ना। यह तो कोई भी समझा सकेंगे। यह राजा–रानी हैं, हम दासियां हैं। ज़रूर आगे जन्म में ऐसे कर्म किये हैं। बुरा कर्म करने से बुरा जन्म मिलता है। कर्म की गति तो चलती ही रहती है। अभी बाप तुमको अच्छी कर्म करना सिखलाते हैं। वहां भी यह तो ज़रूर समझेंगे अगले जन्मों के कर्मों अनुसार ऐसे बने हैं। बाकी क्या कर्म किये हैं वह नहीं जानेंगे। कर्म गाये जाते हैं ना। जितना जो अच्छा कर्म करता है ऊँच पद पाता है। ऊँच कर्मों से ऊँच ही बनेंगे। अच्छे कर्म नहीं करते हैं तो फिर झाड़ू लगाते हैं। भड़ियां ढोते हैं। कर्मों का फल तो कहेंगे ना। कर्मों की थ्योरी चलती है। श्रीमत से अच्छे कर्म होते हैं। कहां बादशाह कहां दास–दासियां। बाप कहते हैं अभी फॉलो करो। मेरी श्रीमत पर चलो तो ऊँच पद पावेंगे। बाप सा. भी कराते हैं। यह मम्मा–बाबा ,बच्चे इतना ऊँच बनते हैं। कर्म है ना। बहुत बच्चियां कर्मों को समझती नहीं हैं। पिछाड़ी को सा. भी होगा। अच्छी रीत पढ़ेंगे–लिखेंगे तो नवाब बनेंगे। रुलेंगे–पिलेंगे तो होंगे ख़राब। यह तो उस पढ़ाई में भी होता है। इनमें भी होता है। कोई तो कुछ भी समझते नहीं। दिल में होता है अभी शादी कर लेवें। काला मुँह करने बड़ी खुशी होती है। तुम भाषण में भी ऐसे समझा सकते हो। इसमें बड़ी युक्ति चाहिए। बोलो, यहां कितने(नी) कन्याएं होंगी जिनकी दिल होती है हम शादी कर काम चिक्षा पर चढ़ें। भगवानुवाच काम चिक्षा पर बैठने से काला मुँह करते हो। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं है। इस समय सारी दुनियां का काला मुँह है। काम चिक्षा पर जल मरे हैं। कहते हैं स्त्री को, कुमारी को देखने से अवस्था गिरती है। यहां तो ऐसी अवस्था नही बिगड़ेगी। बाप कहते हैं नाम, रूप, देखो नहीं। तुम भाई–2 को देखो। बड़ी मन्ज़िल है। विश्व का मालिक बनना कब किसकी बुद्धि में नहीं होगा। यह ल.ना. विश्व के मालिक कैसे बने? बाप कहते हैं मैं तुमको स्वर्ग का मालिक बनाता हूं। बाप का विचार–सागर–मंथन होता रहता था ऐसे–2 समझावें। मिनिस्टर आदि को समझाओ। यह सर्वगुण सम्पन्न.....थे ना। आजकल जिनका तुम नया ब्लड समझते हो वह क्या करते रहते हैं? क्या गांधी जी सिखलाकर गये हैं? रामराज्य बनाने की यह युक्ति है। यह तो बाप का ही काम है। असुर, विकारी थोड़े ही रामराज्य स्थापन करते हैं। देवताएं तो एवरप्योर थे। 21 जन्म पावन फिर 63 जन्म पतित बन जाते हैं। समझाने में इतना मस्त बनना चाहिए। रीढ़ बकरियां क्या समझा सकती हैं। बाप कहते हैं सर्विस पर चढ़ो। तो और ही सो जाते हैं। तकदीर में न है तो बाप क्या कर सकते हैं? बाप बच्चों को समझते रहते हैं। बच्चे, पावन बनो। काम

..... (इन) पर जीत पाने मिम्मत करो। मेरी दाढ़ी की लज्जा रखो। दाढ़ी अक्षर फिर उन्होंने ब्रह्मा को ..... दी है। तो बाप कहते हैं माया पर जीत पहनो; परन्तु माया भी ऐसी है जो एकदम नाक से पकड़ गटर में गिरा देती है। गटर में गिर कर माथा न मुड़ाय लो। शुरू में बाबा बहुत कड़ी वाणी चलाते थे। डॉग इन दी मेंजर ऐसे–2 अक्षर कहते थे। न खुद अमृत पीते हो, न औरों को पीने देते हो। बड़े आदमी आते थे। बाबा की बड़ी ज़ोर से वाणी चलती थी। विख न मिलने से बड़ा हंगामा कर दिया। कोर्ट में बाबा को कहने लगे इनको कहो तो बिख देवे। अरे, हम तो भगवान के महावाक्य सुनाते हैं काम महाशत्रु है। पावन बनना (है)। वह तो गीता के वचन हैं। मैं क्या कहूं? बोलो, नहीं तुम कहो। अच्छा, कह देता हूं। दिल में समझता था बच्चियां (भी) समझू हैं। ऐसे थोड़े ही वह भी मान लेंगी। (राज़ी) करने की युक्ति रचनी पड़े। कितना झगड़ा हुआ। सभी को कहा चिट्ठी लिखा कर आओ हम ज्ञान अमृत पीने जाते हैं। कितना हंगामा हो गया। अखबार में पड़ गया एक कृष्ण आया है उनको 16,108 रानियां चाहिए।.....अभी एक–एक से बैठ कैसे माथा मारें? अखबार ही फिर काम आवे। आगे चल कर अखबारों में भी आवेगा। तुम्हारी बहुत महिमा निकलेगी। कहेंगे बरोबर यह तो भगवान ने कहा है काम महाशत्रु है। पावन बनो। विश्व में शान्ति की स्थापना करना यह तो बाप (का) ही काम है। ऐसी–2 बात निकालो। एक बाप ही फैमली प्लैनिंग बनावेंगे। ब्रह्मा द्वारा फेमली प्लैनिंग की स्थापना। बाकी तो(जो) भी बचेंगे उनका शंकर द्वारा विनाश। फिर एक फैमली की ही पालना होगी। वहां और कोई धर्म होता ही नहीं। जैसे बाबा समझाते हैं ऐसे तुम भी समझाओ। सर्विसएबुल बच्चे भी बहुत कम हैं। ऐसी ग्रहचारी बैठ जाती है जो उड़ नहीं सकते। जैसे कि पत्थर की है। भल नोट्स भी लेते हैं ; परन्तु धारणा भी नहीं। बाप को प्यारे तो सर्विसएबुल ही लगेंगे। बाबा जानते हैं कौन अच्छे सर्विस करने वाले हैं, कौन डिससर्विस करने वाले हैं। अपने ही दिल से पूछना चाहिए हम बाप की याद में भोजन बनाते हैं? भूल तो नहीं जाते हैं? समझाने की बड़ी युक्तियां चाहिए। मिनिस्टर आदि को बुलाते हो, भाषण आदि करते हो तो युक्ति से ऐसा समझाओ। कोई विरला बच्चा है जो विचार–सागर–मंथन कर ऐसी–2 सर्विस में मदद करते हैं। खुदाई ख़िज(द)मतगार होता है। वह समझते हैं खुदा ऊपर से प्रेरणा देते हैं। बाप कहते हैं धूर भी नहीं। मैं तो आता ही हूं पतित सू(से) पावन बनने का रास्ता बताने। यह तो बहुत क्लीयर है ब्रह्मा द्वारा स्थापना पावन दुनियां की। बाकी पतित सभी का विनाश हो जावेगा। यह तो बड़ी अच्छी प्लैनिंग है। विचार करो नई दुनियां में कौन थे। पुरानी दुनियां को बदलना तो बाप का ही काम है या इन मिनिस्टर आदि का काम है? ऐसे–2 फलक से बोलना चाहिए। क्या तुम समझती हो ऐसी वाणी सभी चला सकेंगे? नोट्स लेते हैं तो फिर भी विचार–सागर–मंथन कर वाणी चलाने लिए तैयार होना चाहिए। सिर्फ नोट्स लेने से कया फाय़दा? चार्ट लिखना और चलन उल्टी चलते हैं तो उनसे क्या फायदा समझा जाता है यह सभी गसा लगाते हैं। चलन में फर्क कहां। बोल मीठी कहां। कोई तो लोभी भी बहुत हैं। बस सारा दिन खाऊँ, यह खाऊँ। अरे पेट में बलाऊँ हो जावेगा। तो मुख्य बात बाप समझाते हैं अपन को आत्मा समझो बाप को याद करो तो खाद निकल जावेगी। बड़ा ही फर्स्टक्लास पद पावेंगे। बाप तो विश्व का मालिक बनाते हैं उनको तुम याद नहीं कर सकते हो। भूल जाते हो। कोई कहते हैं निष्ठा कराओ, सामने बिठाओ। बाबा समझता है इनमें कुछ भी ज्ञान नहीं हैं। उनको पता भी नहीं है याद किसको कहा जाता है। सा. हुआ तो बस उसमें ही खुश हो जाते हैं। बाबा समझते हैं माया की ग्रहचारी है। ध्यान में जो जाते हैं अवस्था कच्ची है। घड़ी–2 मम्मा आई ,बाबा आया, फिर कहेंगे विश्वकिशोर आया। कब कुत्ता–बिल्ला भी आ जावेगा। सभी प्रवेश करते हैं। कहानी है ना कुत्ता भी साथ गया। कैसे–2 कहानी वयास ने बैठ बनाई है। फिर भी यह भक्तिमार्ग के शास्त्र बनेंगे। भगवान ने तो आकर नॉलेज दी है। बेहद का बाप हंसी कुड़ी में समझाते रहते हैं। अच्छा, रूहानी बच्चों को याद प्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।